भारत-पाक युद्ध (1971)

"इतिहास में शायद ही किसी युद्ध के बारें में इतना विस्मय तथा अनिश्चित रहा हो जितना बांग्ला देश मुक्ति युद्ध के विषय मे"

D. K. Palit

पश्चिमी पाकिस्तान के सैनिक तानाशाहों द्वारा पूर्वी पाक के नागरिकों पर किये गये बर्बर अत्याचारों ने बांग्लादेश के जनसंग्राम को जन्म दिया। इस आन्दोलन के अनेक कारण थे-

1:- सबसे मुख्य कारण पश्चिमी एवं पूर्वी पाक में आर्थिक विषमता था। पूर्वी पाकिस्तान, जूट, चावल मछली आदि निर्यात करके 59% विदेशी मुद्रा अर्जित करता था। जबकि उनापात की हुई वस्तुओं का उपभोग उसे 20-30% मिलता था।

2:- उद्योगों के विकास पर लगनें वाली पूँजी का 77% पश्चिमी पाक को तथा 23% भाग पूर्वी पाक को मिलता था।

3:- नागरिक सेवाओं का 95%, विदेशी सेवाओ का 85%, स्थल सेना में भर्ती 95% भाग पश्चिमी पाक को मिलता था।

4:- ग्यारह करोड जनसंख्या मे साढे सात करोड जनसंख्या लगभग पूर्वी पाकिस्तान की थी जिनकी मात्र भाषा बंगला थी। जबकि उनके उपर ऊर्दू भाषा को बल पूर्वक लादा जा रहा था।

अधिकारो के हनन की एक सीमा होती है। जब वह सीमा पार हो जाती है, तब क्रान्ती होती है। बांग्ला देश की जनता को शेख मुजीबुर रहमान के जैसा नेता मिल गया था अतः पूर्वी पाक के लोगों ने नागरिक शासन की स्थापना की। फलतः आम चुनाव कराये गये।

इस चुनाव में अनेक राजनैतिक दलों ने भाग लिया। जिसमें मुजीब की पार्टी आवामी लीग को आशातीत सफलता प्राप्त हुई फलत: यह सिद्ध हो गया कि आवामी लीग के नेता मुजीब की सरकार बनेगी किन्तु पश्चिमी पाक के सैनिक तानाशाहों को यह स्वीकार नही था अत: तानाशाह याहिया खाँ ने भुट्टो आदि अन्य राजनैतिक नेताओं की साजिस से राष्ट्री असेम्बली की बैठक को स्थगित कर दिया।

पूर्वी पाकिस्तान के लोग (नागरिक) अब अपने अधिकारों का अधिक हनन नही देख सकते थे अत: उन्होने पूर्वी पाक में विद्रोह कर दिया। शेख मुजीब ने नागरिकों से सामूहिक हड़ताल का आह्वान किया, और इस आह्वान में असंख्य नागरिक ढाका के रेस-कोर्स मैदान में एकत्रित हुए। शेख मुजीब ने स्वतंत्रता प्राप्ती के लिए संघर्ष की घोषणा की। जनता मे जोर की आवाज हुई और जै बांग्ला देश का नारा लगा। तोड़, फोड तथा हिंसात्मक कार्यवाहियाँ प्रारम्भ हो गयी। मुजीब को वहाँ की सेना तथा पुलिस का भी समर्थन प्राप्त था। फलत: क्रान्ती को कुचलने के लिए याहियां खां ने प० पकिस्तान के सैनिको को प्रयोग किया। सैनिकोंद्वारा किये गये कत्ले आंम से बच्चे, बूढ़े, स्त्रियाँ सभी भयभीत हो गये। इन्हें वे सुरक्षा के लिए भारत का दरवाजा खटखटाने लगे। भारत ने उन्हे शरण दी किन्तु सेना का अत्याचार इस सीमा पर पहुँच गया कि शरणार्थियों की बाढ़ आ गयी, और धीरे-2 इनकी संख्या 9000000 (नब्बे लाख) तक पहुंच गयी। परिणाम स्वरुप शरणार्थियों के बोझ से भारतीय अर्थव्यवस्था के पांव लड़खड़ानें लगे। अब यह पाकिस्तान का आन्तरिक मामला नही रहा।

अब समस्या का समाधान बिना युद्ध के सम्भव नही था किन्तु यह भी निश्चित था कि भारत यदि युद्ध का सहारा लेता तो इसमें पाक की तरफ से अमेरिका के युद्ध मे कूदनें की सम्भावना थी। ऐसी स्थिति मे भारतीय सुरक्षा संकट मे पड़ सकती थी। अत: हमें एक ऐसे मित्र राष्ट्र की आवश्यकता थी जो अमेरिका का सैनिक तथा राजनैतिक दृष्टी से सामना करने में समर्थ हो। फलस्वरुप 9 अगस्त 1971 को भारत सरकार ने रूस के साथ 20 वर्षीय शान्ती समझौता कर लिया; जो भारत-रूस मैत्री सन्धि के नाम से घोषित हुआ। बांग्लादेश मे मुक्ति वाहिनी का संग्राम दिन प्रतिदिन जोर पकड़ता गया। धीरे-2 मुक्ति वाहिनी के जवानों ने अनेक स्थानों पर अधिकार भी प्राप्त कर लिया। धीरे-2 समस्या गम्भीर हुई। पाक सेना ने आक्रमण की पहल अपनें हाथ मे ले लिया। भारत-पाक सेनाएं आमने-सामने हुई। पाक ने भारत पर ऐसा हवाई हमला किया कि जिससे विपक्षी सेनाए हवाई हमले करने के योग्य ही न रहें। जिसे प्रियेम्पतिव आक्रमण कहा गया। 3 दिसम्बर को सायं पौने 6 बजे पाक ने पश्चिमी सीमा पर लगे हवाई अड्डे, श्रीनगर, आवन्तीपुर, पठानकोट

जोधपुर, अम्बाला, आगरा आदि पर अचानक आक्रमण कर दिया। उस समय भारतीय प्रधानमंत्री कोलकत्ता में थी। वे तुरन्त दिल्ली आयी, संकट कालीन स्थिति की घोषणा की गयी, तथा पश्चिमी मोर्चे पर भी सैनिक कार्यवाहियों के आदेश दे दिये गये, भारतीय सेना के सम्मुख राजनैतिक दो लक्ष्य रखे गये।

① पूर्वी मोर्चो पर आक्रमणकारी नीति अपनाकर शीघ्रातिशीघ्र बांग्लादेश को मुक्त कराना।

② पश्चिमी पाक ओर उत्तरी सीमा से यदि हमलो हो तो रक्षात्मक नीति अपनाना। भारतीय सेना ने उपरोक्त लक्ष्य को ध्यान मे रखते हुए मुक्तिवाहिनी के साथ बांग्लादेश मे प्रवेश किया और नाटकीय ढंग से 14 दिन के अन्दर ही बांग्लादेश को स्वतंत्र कर दिया, 16 दिसम्बर को सायं 4 बजकर 31 मिनट पर पाक के पूर्वी कमान के सेनाध्यक्ष ले० जनरल ए० के० नियाजी ने ढाका के रेस-कोर्स मैदान में भारत के ले० जनरल अरोणा के समक्ष बिना शर्त 93000 सैनिकों के साथ आत्म समर्पण कर दिया।

युद्ध से प्राप्त मुख्य राजनैतिक एवं सैनिक शिक्षाएं -:

① इस युद्ध ने भारत और अमेरिका के मध्य कटुता का वातावरण उत्पन्न कर दिया इसकी पुष्टी अमेरिका द्वारा U.N.O. की सुरक्षा परिषद में कई बार युद्ध विराम के प्रस्ताव पेश करने तथा भारत को आक्रमण करने वाला देश घोषित किया तथा साथ ही पाक समर्थन में सातवाँ बेडा भेजा जाना भी इसका प्रमाण है। ② इस युद्ध में भारत की विजय ने भारत सोवियत मैत्री सन्धि की परीक्षा कर ली तथा दोनों देशों के सम्बन्धों को और दृढ़ बना दिया। युद्ध के दौरान तीन बार विशेषाधिकार (वीटो) का प्रयोग करके एवं अमेरिकी सातवें बेड़े के पीछे अपना बेडा भेजकर रूस ने एक अच्छे मित्र की भूमिका निभाई। इसके अलावा 6 दिसम्बर 1971 को उसने विश्व के अन्य राष्ट्रों जैसे चीन को पहले चेतावनी भी दी कि "अन्य राष्ट्र इस युद्ध से अलग रहें नहीं तो हमारी सीमाओं को खतरा पैदा होगा, हम चुप नहीं बैठेंगे।"

③ इस युद्ध में हमारे सैनिक एवं राजनैतिक नेतृत्व की दूरदर्शिता अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुई। अन्यथा मार्च से पूर्वी पाक से आने वाले शरणार्थियों की समस्या के कारण चलने वाले संघर्ष को 9 महिने तक कोई नहीं टाल सकता है। किन्तु ऐसा करने से सर्दी का मौसम आने से पूर्वीय क्षेत्रो से चीनी आक्रमणों का खतरा कम हो गया। तथा बांग्लादेश मे आवागमन आदि की दृष्टी से उपयुक्त समय प्राप्त हो गया।

④ इस युद्ध ने युद्ध के महत्वपूर्ण सिद्धान्तों जैसे सहयोग संकेन्द्रण गतिशीलता, सुरक्षा, प्रशासन, आक्रमण कार्यवाहियां आश्चर्य आदि की महत्ता प्रमाणित कर दी। पाक सेना की पराजय का कारण इन सिद्धान्तों का सही ढंग से पालन न करना ही था।

5:- भारत की तीनों प्रकार की सेनाओं एवं उनके सेनांगों के मध्य परस्पर सहयोग ने सिद्ध कर दिया कि युद्ध मे सफलता इन्हीं सेनाओं एवं उनके विभिन्न सेनांगों के आपसी सहयोग पर निर्भर करती है। ⑥ इतने कम समय में हमारी सेनाओं ने पाकिस्तानी सेनाओं को आत्म समर्पण के लिए विवश कर दिया एवं पूर्वी पाक को बांग्ला देश के रूप मे स्वतंत्रता दिलाकर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित कर ली। विश्व इतिहास मे इतने कम समय तक चलने वाले युद्ध से इतना निर्णायक परिणाम पहले कभी नहीं प्राप्त हुआ।

7:- इस युद्ध के पश्चात भारत की पूर्वी सीमा पर बांग्ला देश के रूप में एक नये राष्ट्र का उदय हो जाने से भारत को पाक से केवल पश्चिमी सीमा पर ही खतरा रह गया।

8:- इस युद्ध में हमारी स्थल सेना के कवच, टैंक तथा हमारी पैदल एवं अन्य सेनाओं ने प्राकृतिक बाँधाओं के पार किया एवं अविकसित संचार प्रणाली के बावजूद बांग्लदेश मे जितनी तिव्रता के साथ आगे बढ़ी; इसका श्रेय इनकी प्रशासनिक सेवाओं को दिया जा सकता है।

9:- इस युद्ध के पश्चात शिमला समझौते के द्वारा भारत को कश्मीर का कुछ भाग और मिल गया। जिस पर भारतीय सेना ने कब्जा किया था।

10:- भारतीय नौ सेना के जल पोतों ने बंगाल की खाड़ी तथा अरब सागर की इतनी सुदृढ़ नाकेबन्दी की, कि शत्रु केवल स्थलीय कार्यवाही करने के लिए बाध्य हो गया। इतना ही नहीं बल्कि हमारे विमान वाहक पोत विक्रान्त के विमानों ने लगातार उड़ानें भरकर शत्रु के स्थलीय क्षेत्रों को भी क्षति पहुचाने का प्रयास किया।

11:- भारतीय वायु सेना ने युद्ध के दौरान शीघ्रता से नभ प्रभुत्व प्राप्त करके शत्रु की वायु शक्ति को नाकामयाब कर दिया।

12:- यद्यपि इस युद्ध में दोनों राष्ट्रों ने एक दूसरे के विरुद्ध मनोवैज्ञानिक प्रचार किया लेकिन पाक का प्रचार असफल रहा जबकि भारत का प्रचार सफल होने के कारण लगभग 93000 पाक सैनिकों ने ले० जनरल A.K० नियाजी के नेतृत्व में भारतीय ले० जनरल जसजीत सिंह अरोड़ा के समक्ष आत्म समर्पण कर दिया। भारतीय मनोवैज्ञानिक युद्ध का एक उदाहरण देखने योग्य है।

जनरल मानिक शाह ने बांग्ला देश में लड़ रहे पाकिस्तानी सैनिकों को सन्देश प्रसारित करते हुए कहा "आप चारों ओर से घिर चुके हैं। भागने का कोई रास्ता नहीं है। आपके हित मे अच्छा होगा कि आप आत्म समर्पण कर दें। आपके साथ जिनेवा समझौते के अनुसार व्यवहार किया जायेगा।" फल स्वरूप पर्याप्त गोला, बारूद एवं साज समान रहते हुए भी लगभग एक लाख तिरानवे हजार सैनिकों ने आत्म समर्पण कर दिया।

जो इतिहास की पहली और महत्वपूर्ण घटना है।